This question paper contains **8+2** printed pages]

आपका अनुक्रमांक..........................

5548

B.A. (Programme)/I I-II

HINDI LANGUAGE — Paper I (A)

हिन्दी भाषा — प्रश्न-पत्र I (क)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. निम्नलिखित अनुच्छेद आपके पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठों से लिए गए हैं, किन्हीं **दो** अनुच्छेदों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15+15

(क) तत्वज्ञवर हर्बर्ट-स्पेंसर ने विकास सिद्धान्त की जो दार्शनिक स्थापना की है उसमें धर्मतत्व की भी विस्तृत मीमांसा है। स्पेंसर ने अणुजीवों से लेकर मनुष्य तक सब प्राणियों का सूक्ष्म निरीक्षण करके अंत में यही सिद्धान्त स्थिर किया कि परस्पर साहाय्य की प्रवृत्ति धर्म की मूल प्रवृत्ति है जो सजीव सृष्टि के साथ ही व्यक्त हुई और उत्तरोत्तर उत्कर्ष प्राप्त करती गयी। यह प्रवृत्ति आदि में संतानोत्पादन और संतान-पालन के रूप में प्रकट हुई। एक घटात्मक अणुजीवों

में स्त्री-पुरुष भेद नहीं होता। उनकी वंशवृद्धि विभाग द्वारा होती है। अत: हम कह सकते हैं कि संतान के-दूसरे-के-लिए अणुजीव अपने संतान के लालन-पालन के लिए स्वार्थ त्याग करने में प्रसन्न होते हैं। यही प्रवृत्ति बढ़ते-बढ़ते इस अवस्था को पहुँचती है कि लोग अपनी संतति के सहायतार्थ ही नहीं अपने जाति-भाइयों के सहायतार्थ भी सुख से स्वार्थ-त्याग करते हैं। अस्तु, सब जीवों में श्रेष्ठ मनुष्य को इसी प्रवृत्ति के उत्कर्ष साधन में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव की प्राप्ति के प्रयत्न में लगा रहना चाहिए।

(*i*) हर्बर्ट स्पेंसर ने विकास सिद्धान्त के किन बिन्दुओं की ओर संकेत किया है ? स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) व्यक्ति की परस्पर सहायता की प्रवृत्ति किस रूप में दिखाई देती है ?

(*iii*) अणुजीवी स्वार्थ-त्याग करके क्यों प्रसन्न होते हैं ?

(*iv*) 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आशय लिखिए।

(*v*) स्वार्थ, सूक्ष्म, त्याग, श्रेष्ठ, विस्तृत, प्रसन्न शब्दों के विलोम लिखिए।

(ख) काल के परिवर्तन की कैसी महिमा है जो अपने साथ-ही-साथ मानुषी प्रकृति के परिवर्तन पर भी बहुत-कुछ असर पैदा कर देता है। वाल्मीकि ने जिन-जिन बातों को अवगुण समझ अपनी कल्पना के प्रधान नायक रामचन्द्र में बरकाया था, वे ही सब व्यास के समय में गुण हो गईं, जिनकी कविता का मुख्य लक्ष्य यही था कि अपना मान, अपना गौरव, अपना प्रभुत्व जहाँ तक हो सके न जाने पावे। भारत के हर एक प्रसंग का तोड़ अंत में इसी बात पर है। शत्रु-संहार और निजकार्य-साधननिमित्त व्यास ने महाभारत में जो-जो उपदेश दिए हैं और राजनीति की काट-ब्यौंत जैसी-जैसी दिखाई है उसे सुन बिस्मार्क सरीखे इस समय के राजनीति के मर्म में कुशल राजपुरुषों की अकिल भी चरने चली जाती होगी। इससे निश्चय होता है कि प्रभुत्व और स्वार्थसाधन तथा प्रवंचना परवश भारतवर्ष उस समय कहाँ तक उदार भाव, संवेदना आदि उत्तम गुणों से विमुख हो गया था। युधिष्ठिर धर्म के अवतार और सत्यवादी प्रसिद्ध हैं पर उनकी सत्यवादिता निज कार्य-साधन के समय सब खुल गई।

(*i*) उपर्युक्त अनुच्छेद किस पाठ से लिया गया है ? उसका शीर्षक व लेखक का नाम बताइए।

(*ii*) युधिष्ठिर कौन थे ? उनके चरित्र की किसी विशेषता का उल्लेख कीजिए।

(*iii*) काल के परिवर्तन का प्रभाव मानुषी-प्रकृति पर किस प्रकार दिखाई देता है ?

(*iv*) 'युधिष्ठिर की सत्यवादिता निज कार्य-साधन के समय खुल गई।' इस पंक्ति के माध्यम से किस घटना की ओर संकेत किया गया है ?

(*v*) 'प्रभुत्व', 'परवश' और 'प्रवंचना' शब्दों के अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(ग) सन् 30 से 40 तक के वर्ष हिंदी साहित्य में बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इन वर्षों में हिंदी साहित्य यथार्थवाद की भूमि पर आगे बढ़ा। प्रेमचन्द ने 'गोदान' में महाजनों के कठिन शोषण के साथ-साथ राय साहब जैसे दुरंगी नीति पर चलने वालों का भी चित्र खींचा। प्रसादजी ने 'तितली' में भूमि समस्या का सही रूप पेश करते हुए बताया कि इस समस्या को हल करने के लिए चकबंदी आदि की योजनाएँ बेकार हैं। जमीन जोतने वालों को मिलेंगी तभी यह समस्या हल होगी। निराला ने देवी, चतुरी चमार, कुल्ली भाट आदि अपने अपूर्व रेखाचित्रों में गरीबों की दशा का चित्रण ही

नहीं किया वरन् जो उनके उद्धार का ढोंग रचते थे, उन्हें भी बेनकाब कर दिया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'काव्य' नाम के निबन्ध में चन्दाप्रेमी लेक्चरबाज़ नेताओं पर व्यंग्य करते हुए 'मेघदूत' में भारतवर्ष के चित्रण पर लिखा है : ''जो इस स्वरूप के ध्यान में अपने को भूलकर कभी-कभी मग्न हुआ करता है, वह घूम-घूमकर वक्तृता दे या न दे, चन्दा इकट्ठा करे या न करे, देशवासियों की आमदनी का औसत निकाले या न निकाले, सच्चा देश प्रेमी है।''

(*i*) उपर्युक्त अनुच्छेद के पाठ का शीर्षक एवं लेखक का नाम बताइए।

(*ii*) प्रेमचंद ने 'गोदान' उपन्यास में यथार्थ का क्या चित्र खींचा है ?

(*iii*) प्रसाद ने 'तितली' उपन्यास में किस समस्या को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ?

(*iv*) 'रामचन्द्र शुक्ल' साहित्य में किस तरह के लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं ?

(*v*) लेखक ने सच्चे 'देश प्रेमी' का उल्लेख किस तरह से किया है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर इस अनुच्छेद का विश्लेषण कीजिए :

'जीवन की किसी अलभ्य अभिलाषा से वंचित होकर जैसे प्राय: लोग विरक्त हो जाते हैं, ठीक उसी तरह किसी मानसिक चोट से घायल होकर, एक प्रतिष्ठित जमींदार का पुत्र होने पर नन्हकूसिंह गुंडा हो गया था। दोनों हाथों से उसने अपनी संपत्ति लुटायी। नन्हकूसिंह ने बहुत-सा रुपया खर्च करके जैसा स्वांग खेला था, उसे काशी वाले बहुत दिनों तक भूल नहीं सके। बसन्त ऋतु में यह प्रहसनपूर्ण अभिनय खेलने के लिए उन दिनों प्रचुर धन, बल, निर्भीकता और उच्छृंखलता की आवश्यकता होती थी। एक बार नन्हकूसिंह ने भी एक पैर में नूपुर, एक हाथ में तोड़ा, एक आँख में काजल, एक कान में हजारों के मोती तथा दूसरे कान में फटे हुए जूते का तल्ला लटकाकर, एक जड़ाऊ मूठ की तलवार, दूसरा हाथ आभूषणों से लदी हुई अभिनय करने वाली प्रेमिका के कंधे पर रखकर गाया था– "कहीं बैंगन वाली मिले तो बुला देना।"

(*i*) उपर्युक्त अनुच्छेद का केन्द्रीय भाव लिखिए। 2

(*ii*) 'अलभ्य अभिलाषा से वंचित होकर प्राय: लोग विरक्त हो जाते हैं'– इस पंक्ति से प्रारम्भ करते हुए एक अनुच्छेद लिखिए। 4

(*iii*) काशी वाले नन्हकू सिंह के किस रूप को बहुत दिन तक नहीं भूल सके थे, लिखिए। 4

3. किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×5=15

(*i*) ईसा ने बालक को गोद में लेकर अपने शिष्यों को क्या शिक्षा दी ?

(साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है)

(*ii*) भाषा को बहता नीर क्यों कहा गया है ?

(भाषा बहता नीर)

(*iii*) व्यक्ति को स्वतंत्र के साथ परतंत्र क्यों कहा गया है ?

(समाज और व्यक्ति)

(*iv*) अमेरिका की खोज किसने की ? उनका नाम बताइए।

(अस्मिताओं का संघर्ष)

(*v*) हास्य और व्यंग्य का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(हंसो-हंसो जल्दी हंसो)

(*vi*) भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास में किस समस्या को उठाया है ? (आज के अतीत)

(*vii*) 'नारीवाद' से आप क्या समझते हैं ?

(मित्र से संलाप)

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के आधार पर किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×5=15

(*i*) माणिक मुल्ला ने प्रेम को सामाजिक भावना क्यों माना है ?

(*ii*) जमुना का नमक माणिक ने कैसे अदा किया ?

(*iii*) माणिक मुल्ला को अचानक सत्ती ने एक दिन क्या कहा ?

(*iv*) तन्ना समाज के किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और कैसे ?

(*v*) सत्ती और चमन ठाकुर के बीच कटुता क्यों बढ़ती गयी ?

(*vi*) 'घोड़े की नाल' सौभाग्य का लक्षण कैसे सिद्ध हुई ?

(*vii*) महेसर दलाल का चरित्र समाज के किस रूप को उजागर करता है ?

अथवा

'यात्राएँ' के आधार पर किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(*i*) 'यात्राएँ' रचना के रचनाकार कौन हैं, नाम बताइए। इसमें संकलित **दो** पाठों के नाम बताइए।

(*ii*) नार्वे के घर किस प्रकार के बनाए जाते थे ?

(*iii*) कोचीन को अरब सागर की साम्राज्ञी क्यों कहा जाता है ?

(*iv*) बुद्ध ने अपने शिष्य आनंद को क्या उपदेश दिया था ?

(*v*) मारीशस को श्वेत-द्वीप क्यों कहा गया है ?

(*vi*) केरल के जन-जीवन का चित्रण किस प्रकार किया गया है ?

(*vii*) निकोलस रोदिक कौन थे और उनकी समाधि कहाँ है ?

5. किसी **एक** विषय पर परिचर्चा **अथवा** विस्तृत टिप्पणी लिखिए : 10

(*i*) लोक-सभा के चुनाव

(*ii*) आधुनिक शिक्षा प्रणाली

(*iii*) गहराता आतंकवाद।

6. निम्नलिखित कथांश को संवादों में रूपान्तरित कीजिए : 5

नन्हकू ने उन्मत्त होकर कहा "मालिक ! जल्दी कीजिए।" दूसरे क्षण पन्ना डोंगी पर थी और नन्हकूसिंह फाटक पर इस्टाकर के साथ। चेतराम ने आकर एक चिट्ठी मनियार सिंह को हाथ में दी। लेफ्टिनेण्ट ने कहा—"आपके आदमी गड़बड़ मचा रहे हैं। अब मैं अपने सिपाहियों को गोली चलाने से नहीं रोक सकता।" "मेरे सिपाही यहाँ हैं, साहब ?"—मनियारसिंह ने हँसकर कहा। बाहर कोलाहल बढ़ने लगा। चेतराम ने कहा—"पहले चेतसिंह को कैद कीजिए।" "कौन ऐसी हिम्मत करता है ?" कड़ककर कहते हुए बाबू मनियारसिंह ने तलवार खींच ली।

7. (क) कोश की परिभाषा देते हुए किन्हीं **दो** कोशों के नाम बताइए। 5

(ख) कोश में प्रविष्टि के लिए निम्नलिखित शब्दों को वर्णक्रमानुसार लिखिए :

संकट, सुख, स्वागत, सुमेरु, सीवन, सर्प, प्रज्ञा, सौराष्ट्र, समर्पण, कृषक, कुम्भ, गर्वीला, टेढ़ा, चेतना, आज्ञा, प्रजा, प्रार्थना, परम्परा, प्रतीक, पुण्य। 5

(ग) निम्नलिखित वाक्यों का पद-क्रम व्यवस्थित कीजिए : 5

(*i*) शिवालय में भक्तजन पूजा कर रहे थे प्रातः काल।

(*ii*) आज समस्या विकाराल हो गयी है आतंकवादी।

(*iii*) मुझे बनाकर भोजन दो।

(*iv*) हमारी आज़ादी अधूरी है स्त्री और दलितों की मुक्ति के बिना।

(*v*) मूल्यों पर आधारित गुणवत्ता है उच्च शिक्षा की।